RESSA
रेसा
पुष्प-मंडी
PUSHPA-MANDI
'खुशबू कैसे ना आये मेरी बातों से यारों,
मैंने बरसों से एक ही फूल से मोहब्बत की है।।"

RESSA

रेसा

दिल अगर दिल है तो वाबस्ता-ए-गम भी होगा
निकहत-ए-गुल भी कहीं गुल से जुदा रहती है

RESSA

रेसा

फूल ही फूल याद आते हैं

पुष्प-मंडी

107

RESSA

रेसा

काँटों से गुजर जाता हूँ दामन को बचा कर
फूलों की सियासत से मैं बेगाना नहीं हूँ

RESSA

रेसा

मैं चाहता था कि उस को गुलाब पेश करूँ

वो ख़ुद गुलाब था उस को गुलाब क्या देता

RESSA

रेसा

फूल तो फूल हैं आँखों से घिरे रहते हैं
काँटे बे-कार हिफ़ाज़त में लगे रहते हैं

RESSA

रेस्सा

फूल ही फूल खिल उठे मुझ में
कौन आया तेरे ख्यालों में

RESSA

रेसा

मुस्कुराते हुए फूल का कहना है,
मुस्कुराते हुए जीवन का हर गम सहना है।

पुष्प-मंडी

103

RESSA

रेसा

महसूस तो करते है मगर छू नहीं सकते,
तुम फूल नहीं, फूल की खुशबू की तरह हो।

RESSA

तस्वीर मैंने मांगी थी शोख़ी तो देखिए
इक फूल उसने भेज दिया है गुलाब का

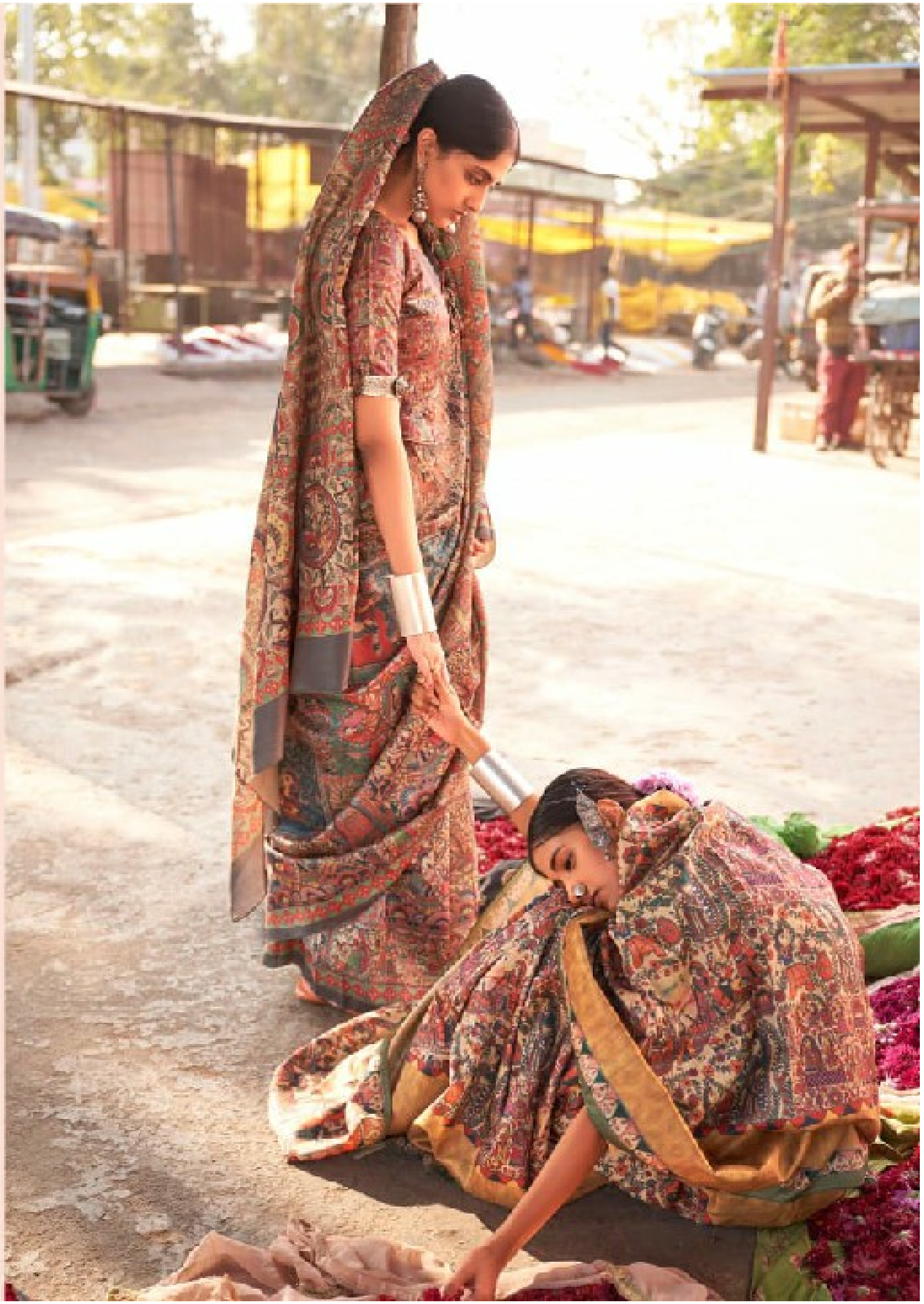

RESSA

रेसा

काँटों से घिरा रहता है चारों तरफ से फूल
फिर भी खिला रहता है, क्या खुशमिज़ाज है

RESSA

रेसा

हम जान छिड़कते हैं जिस फूल की खुशबू पर
वो फूल भी कांटों के बिस्तर पे खिला होगा

RESSA

रेसा

कई तरह के तहाइफ़ पसंद हैं उस को
मगर जो काम यहाँ फूल से निकलता है

पुष्प-मंडी 101

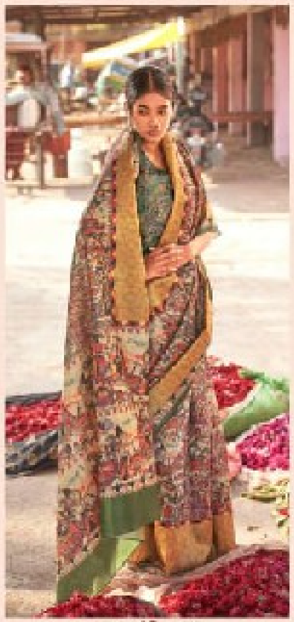

पुष्प-मंडी 102

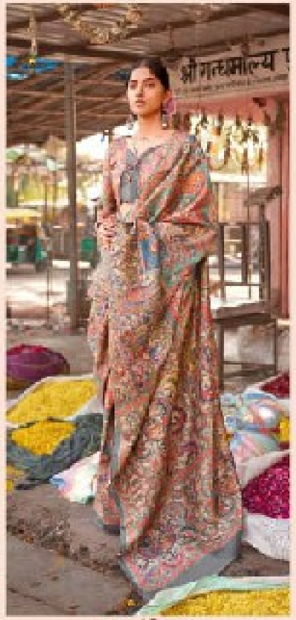

पुष्प-मंडी 103

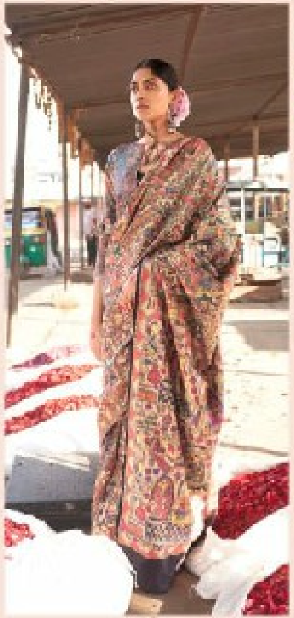

पुष्प-मंडी 104

पुष्प-मंडी 105

पुष्प-मंडी 106

RESSA

रेसा

पुष्प-मंडी 107

पुष्प-मंडी 108

पुष्प-मंडी

PUSHPA-MANDI

फूल ही फूल खिल उठे मुझ में
कौन आया मिरे ख़यालों में